नेत्रदान

नेत्रदान

(खण्ड काव्य)

राम विलास साहु

पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

NETRADAN (नेत्रदान)

A Maithili block poetry by Shri Ram Vilas Sahu

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 6200635563; 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल) बिहार : 847452

दाम : 100/- (भा.रू.)
सर्वाधिकार © श्री राम विलास साहु
पहिल संस्करण : 2021

ISBN : 978-93-93135-08-7

ऐ पोथीक सर्वाधिकार सुरक्षित अछि। प्रकाशक अथवा कॉपीराइट धारकक लिखित अनुमतिक बिना पोथीक कोनो अंशक छाया प्रति एवं रिकॉडिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिक, कोनो माध्यमसँ अथवा ज्ञानक संग्रहण वा पुनर्प्रयोगक प्रणाली द्वारा कोनो रूपमे पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहि कएल जा सकैत अछि।

दू आखर

दरकैत दिलकेँ जोड़ै छी
मनक मनरोगकेँ हरै छी
जाति धर्मसँ ऊपर उठि
सभक हृदयमे बसै छी
मातृभाषाक विकास खातिर
अपन मेहनतिक वलिदानसँ
पाठकगण-के मान-सम्मानमे
'नेत्रदान' अर्पित करै छी
नीक-बेजा तँ अपनहि कहब
हम तँ सेवामे समर्पित छी।

राम विलास साहु

पोथीक मादे

'नेत्रदान' खण्डकाव्य एकटा महान रचनाकार कथाकार एवम् कवि मान्यवर रामविलास साहुजीक अनमोल एवम् अमर कृतिक रूपमे देखल जा सकैत अछि, ऐमे एक्को पाइ अतिशयोक्ति नहि। जन्महिसँ या वर्ग विशेषेसँ क्यो कथाकार, उपन्यासकार, गीतकार आकि कवि हेता से दिन दुनियॉ आब नहि रहल। हम कहब जे साहुजीक ई अमर कृति क्यो पढ़ि कऽ अपन विचार सागरमे आत्म चिन्तन करैथ तँ ई बात अक्षरश: सोल्होअना सत्य बुझबामे औतैन।

ऐ प्रकारक रचनाकेँ रचबाक लेल केतेको दिवा-राति धरिक कठिन तपस्याक फलाफल हमरा लोकनिक समक्ष प्रस्तुत अछि। समस्त मैथिलसँ हमर आग्रह जे अपने लोकैन ऐ खडकाव्यकेँ पढ़ि लाभ उठाबी आ सभ्य-अ-सभ्य दुनू प्रकारक सामाजिक व्यक्तिकेँ दीना सन व्यक्ति बनै आ बनबैक दिशामे प्रयत्न करैथ। दीना हमरे अहॉ समाजक दीन-हीन, अथवल माय-बापक सच्चा सपूत बनि धर्मनाथक आन्हर बेटी अन्धरानीकेँ अपन एकटा आँखि दऽ सुन्दर सुनयना बना जगतकेँ देखक योग्य बनौलक, जे अन्धरानी आँखिसँ आन्हर छलि ओ दीनाक आँखि पाबि एकटक दीनाकेँ निहारि रहल छलि आ दीना अन्धरानीकेँ।

ऐ प्रकारेँ ई खण्डकाव्य हमरा सबहक बीच निश्तुकी एकटा अमर कृतिक रूपमे अपन पहिचान बनबैक योग्यता रखैत अछि।

साहुजीक लेखनीसँ एतेक सुन्दर सन रचना गढ़बामे निश्चित रूपेँण माता सरस्वतीक असीम कृपा भेलैन अछि। नेत्रदान खण्डकाव्य जहिना पोथीक नाओं अछि तहिना प्रयुक्त पात्रक नाओं केर सार्थकता उपस्थित करबामे रचनाकार सोल्होअना अर्थात् चौबीस कैरेट सोना सदृश्य खड़ा उतरला अछि।

हमरा आशा नहि अपितु विश्वास अछि जे साहुजी जहिना समस्त मैथिल आ मैथिली साहित्य-प्रेमीक समक्ष समय-समयपर अपन रचना लऽ अहिना उपस्थित होइत रहता आ मनोरंजने मात्र नहि अपितु आजुक युवा पीढ़ी जे दोसर धारामे बहि रहल छैथ, हुनको लोकनिकेँ सही बाट देखेबामे समर्थ हेता। अहीक संग हमर अशेष शुभ मंगल कामना हुनका संग रहत। बेस तँ आइ अन्तिम मासक एगारहम दिन छी, किछु दिन शेष रहल अछि। सभकियो सालक विदाइमे जुटल छीहे, जुटल रही। हमरा दिससँ अपने समस्त मैथिलजनकेँ आबएबला नव वर्षक शुभकामना आ बधाइ।

दुर्गानन्द मण्डल

निर्मली

11.12.2021

नेत्रदान

(1)

धर्मनाथ-दयामन्तीक मन मन्हुआएल
दुखाएल मनक दुख बढ़िते गेल
सन्तानक खातिर हृदय व्याकुल
हरियर मन मरुभूमि बनि गेल
दुनूक दुख बढ़ैत निरास मन
बरसए लगल आँखिसँ नोर
व्यथित व्यथासँ केलक हरिक पुकार
भगत भजन बहुतो केलक
देव-देवीक पूजन करैत बढ़ल
गहबरे-गहबरे डाली लगौलक
तैयो दयामन्तीक दुख दूर नहि भेल
सन्तानक भूखल धर्मनाथ दयामन्ती
चिन्तामे डुमि सोगाए लगल

अपन वंशक अन्त होइत देख
जिनगीसँ निरास भऽ गेल
सभ किछुसँ सम्पन्न रहितो गृहमे
सन्तानक सुख नहि भेटैत अछि
मुदा ढलैत उमेरमे परिवर्तन भेल
तरसैत निरसल मन बरसए लगल
जेना दयामन्तीक सुखल गातमे
कलैश हलैश फूल फुला गेल
अजगुत लीला दयामन्तीकेँ भेल
पतिक सेवासँ मेवा भेटल
दयामन्तीकेँ कोखिक सुख भेटल
देवे-सेवे बेटी जन्म लेलक
लगले खबरि समाजमे पहुँचल
गामक बुढ़िया दादी पितियाइन आबि
सभ मिलि देलक शुभ आशीष
बुढ़िया दादी धर्मनाथसँ बजली-
'बेटी देखिकऽ कीए झखै छी?
इहए बेटी हेतह वंशक रखवारि
बेटासँ नीक बेटी भेलह

बुढ़ाड़ी जिनगीकेँ लगेतह पार
बेटासँ बेटी बेसी सेवा करतह
फाँड़ बान्हि पाछू नहि हटतह
बेटीए करतह वंशक इजोत
साए बर्खक हमर उमेर अछि
हमरोसँ बेसी दिन बेटी जीतह
नैहरासँ ससुरा धरि बेटी
दुनू घरमे सुख बरसेतह।'
धर्मनाथक हृदयमे दया उमड़ल
जेना सागरमे, ढल बजरल
मरल जिनगीमे अरमान जगल
चँगेरा-चँगेरा मधुर बाँटलक
छठिहारे दिन केलक मरोरथ पूर
हरियर मोन हरियाए लगल
मनमे बहए लगल सिनेहक धार
कोरामे बेटी लऽ निहारए लगल
बेटी अछि छीमगर-पोरगर
रूप चन्द्रवती नाक नकोर
मुदा आँखिसँ आन्हर अछि

सबुर बान्हि धर्मनाथ सोचिकऽ
नाम रखलक अन्धरानी
ललाइत-पलाइत दिन आगू बढ़ल
खेलए लगली सहेलीक संग
अकीलगर-कीलठगर दिव्य ज्ञानी
करए लगली घरक सभ काज
जखने भेली ढेरबा अन्धरानी
यौवन पाबि मधुआए लगल
आबि गेल सोल्हम वसन्त
लाल रंगमे रंगाए गेल चिरवसन
बिनु नयन जग अन्हार देखि
अन्धरानी बजली सखी सुचिताक संग।

(2)

अन्धरानी- हे सखी,

आबि गेल वसन्त

मजरि गेल आम जामुन महुआ

चहु दिस मह-मह करैए उपवन

वसन्ती हवा मस्ती भरैए

सिहैर रहल अछि हमर तन-मन

कोइलीक गीत करेजमे लगैए

बाग-बगीया सजल पड़लए

झुलुआपर बैसल-ए हमर मन

यौवनसँ देह गदरा रहल-ए

कन्त लेल मन व्याकूल होइए

मोनक दुआरि सुआगतमे खुजल -ए

कहिया आबि मनमे समाएत

पुष्पक माला मौला रहल-ए

बाँहिक हारमे समाएब हम कहिया

लगैए विधाता वाम पड़ल-ए

कीए तँ हम छी आन्हर

के अपनाएत हमर जीवन

जे कहत हमरा शुभ वचन
की जान मारत ई यौवन तन
मुदा, वसन्त जानि किछु कहि रहल-ए
आनत जिनगीमे शुभ सनेस
की हरि लेत मनक सभ कलेश।

सुचिता सहेली-
हे अन्धरानी, नै बाजू एहेन बात
सवुर बान्हि मोन राखू कात
धियानसँ सुनू हमर विचारक बात
अन्हरा, लंगड़ा, कुबड़ा, डीठरा
सभ रहैए जगमे जोड़क संग
अहाँ तँ असलमे छी रूपक रानी
नहि कोनो छी परीसँ कम
रम्भा, मेनका, उर्वसी, रति
सभ पड़ैत अछि अहाँसँ कम
अहाँक कान्त एहेन पुरुष हेता
रति मदन देखि लजेता
नेत्र ज्योतिसँ जग देखौता

नाओं अपन इतिहासमे रचौता
प्रकृत उमैड़ देखैले औता
देख देवगण सभ अकचकेता।

अन्धरानी-
सखी, ई की कहि भरमाबै छी
की जानि बुझि शरमाबै छी
आन्हर छी चिन्तामे मरै छी
जिनगी ले दिन राति झखै छी
अइ अन्हरीकेँ के पकड़त हाथ
परिणय सूत्रमे बान्हि अपनाएत
जीवन संगनी बना बसाएत
ई हमरा नइए कोनो आश
जीवनमे अछि बुझू निराशे-निराश
की साधवी बनि काटब दिन-राति
नरक भोगैले जनम नेने छी
तपस्वनी बनि काटब वनवास।।

सुचिता-
ई धरती वीरसँ भरल अछि

कर्मवीर, शूरवीरक कमी नै अछि
सभ नारीकेँ पुरुक संगी छी
पुरुखक संगी नारी सेहो छी
दुनू मिलि सृष्टि सृजैत अछि
अहूँकेँ आएत जिनगीमे विहान
धोड़ी चढ़ि आएत श्रीकान्त
संगनी बना लऽ जाएत निवास
दुख-सुखमे देत सदिखन साथ
पूर करत मन-मनोरथक आश।

अन्धरानी- हे सखी,
सुनि हमर मन होइए साकाँच
धीरज राखि बचबै छी कहुना प्राण
कहिया भेटत हमरा अइसँ त्राण
सोल्हम वसन्त बित रहल-ए
यौवनक चरण चढ़ि उमरल-ए
माए-बापकेँ चिन्ता सतबैए
अन्हरी बेटी देखि झखैए
सोगे दिन-राति नोर बहबैए

बिनु नयनक बनौलक विधाता
सभक बेर जगल सजग छला
हमरा सजा दइ खातिर सुति रहला
सभ नारी अछि दुर्गा, लक्ष्मी, शती
नयन बिनु हम छी कुलक्षनी
जनमैते मरितौ तरि जइतौं वैतरणी।

सुचिता- हे सखी,
चैत मास सभ चेतैए
बैशाखमे मन जुड़बैए
जेठ मासमे होश करैए
सौन-भादो चास लगबैए
आसीनमे आश लगा करैए कमठौन
कार्तिकमे कल्पतरू तर बैसि
नव-नव कल्पनाक साधना करैए
अगहन चास काटि दौनी करैए
कोठी, मुनहर, बखारी भरैए
नअ मास कर्मवीर बनिकऽ
चास-बासमे सवुर राखैए

तीन मास सुखसँ जिनगी बितबैए
तहिना जिनगीक चक्र चलैए
तइले अश्रु कीए बहबै छी
जखन उमड़ल धार बान्हल जाइए
दिलमे बान्ह अहूँ नम्हर बान्ह
तखन दिल मोन हएत शान्त
जइसँ हएत अहूँक कल्याण।

अन्धरानी- हे सखी,
सात समुन्दरसँ गहींर हमर मोन अछि
तैयो उठैए रहि-रहि हिलकोर
उधिया ज्वार-भाटा बनि-बनि
सुनामी लहरि लइए जान
रोकलासँ रोकलो ने जाइए
आफतमे जिनगी फँसि जाइए
बिनु नर नारीक जीवन भारी
समुद्रमे बोहि भाँसि जाइए
धीरजक बान्हक सीमान टुटि-टुटि
अनन्त अकासमे उड़िया रहल-ए।

सुचिता- हे सखी,
सोलहम वसन्तमे उमरल यौवन
सत्तरहम सताए भरमाए रहल-ए
अठारहम मठरि अठखेल करैए
उन्नीसम सीमाक बान्ह तोड़ैए
बीसम विषाय महुरा गेल-ए
एकैसम वसन्त धमकाए रहल-ए
आँखि दुनू हमर फरैक कहैए
शुभ घड़ी शुभ समादक संग
हमरा मनमे विश्वास जगैए
डारिपर बैस कौआ कुचैर
हमरा जेना किछु कहि रहल-ए
आइ लगैए आएत मेहमान
मनमे बसत सीताकेँ राम
अहाँक दुखक हएत विराम
रामोकेँ छैन मनमे विश्वास
सीताक पकड़त दुनू हाथ
आशा किछु लगि रहल-ए
निरसल मनमे हएत बरसात।

अन्धरानी- हे सखी,
नहि छी सुन्नर नहि सीता सन
नयन बिनु कुलक्षणी बनल छी
केना औता हमरा लग राम
राम सीताकेँ, सीता रामकेँ देखि
नयन मिला पसीन केलक
मुदा हम छी अन्हरी ऐ कुलक
केना नयन सुख हमरा भेटत
तहूमे ऐ कलियुगक समयमे
ऐ युगमे राम केना औता
जौं राम आबियो जेता ऐठाम
असली सीता नहि पाबि कऽ
राम केना मनमे बसौता-अपनौता।

सुचिता- हे सखी,
ई मिथिला पवित्र भूमि छी ऐ
घर-घरमे राम-सीता बसैए
कोनो कि अयोध्या छिऐ

जे एकेटा राम अखनो अछि
देखियौ अखनो बटोही बनि
आबि रहल छैथ रामक रूपमे
एको रती झूस नहि हएत
जखन बसाएत मन मन्दिरमे।

(3)

दीन-हीन परिवारक दीना
घरमे नहि छल खाइक उपाए
बीमार पड़ल माए-बाप अथवल
खाइ खातिर रहैए उपास।
माए-बाप दीनासँ बाजल-
बेटा, करह खाइक किछु उपाय
हम बीमार अथवल पड़ल छी
तूँ जा कऽ करह किछु काज
बोइन मजुरी जएह किछु भेटतह
खा कऽ कहुना परान तँ बँचाएब।

माए-बापक आज्ञा पाबि दीना
काज खोजैले धेलक बाट
जाइत-जाइत किछु गाम टपल
चलैत थाकि दीना ठमकल
पियासक त्राससँ मन व्याकुल
बाटक कात गाछक छाहैर बैस
हियासए लगल पानि चारू कात

बाटमे कुइयाँ, इनार नहि भेटल छल
जे पानि पीबि मिटाएत त्रास
औन-पौन भऽ बैसल छाहैर
चारू कात नजैर हियौलक
नहि देखलक केतौ पानिक आश
देखलक बगीचामे दू बाला ठाढ़
विनती भावसँ पुछलक दीना
देखा दिअ एकटा इनार
पानि पीब हम मिटाएब त्रास
पुनः चलि जाएब बाटे-बाट।

सुचिता- धखेली नहि, जिज्ञासासँ पुछलैन
केतए-सँ एलौं हेन बटोही?
कोन गाम अखन जाएब
कनी विलैम चलू अखने
पीआ देब पानि भरि छाँक
हाथ पकैड़ सचिता अन्धरानीकेँ
आगू-आगू धेलक घरक बाट
पाछू-पाछू बेटोही दीना चलि

पहुँच गेल अन्धरानीक आवास
अन्धरानी अख्हिाइस लोटामे
शीतल जल लऽ एली बटोहीक पास
सुचिता मुस्की मरैत चलि गेली कात।

अन्धरानी-
जल भरल लोटा दैत बजली-
अनचिन्हार छी एक दोसरसँ
अतिथि जानि पीबै छी पानि
पीब लिअ शीतल जल भरि छाँक
पिआस मिटए कने सुस्ता लिअ
भूखल छी किछु खा लिअ
जाइ छी करैले भानस-भात
अपने बुझि सेवा सत्कार करब
दिलमे नहि अछि कोनो दूजा भाव
मिथिलामे अदौसँ अछि एहेन बेवहार
अतिथिकेँ देव समान बुझि कऽ
घर-घरमे करै छैथ सेवा सत्कार
विश्वास करू कने अवसर दिअ

अपने हाथसँ बनाएब प्रसाद
प्रेम भरल भोजन खुआएब अहाँकेँ
जिनगी भरि राखब हमर याद
तखन धड़व उद्देश्यक बाट
बनि जाएत अहाँक शुभ काज।

अन्धरानीक मधुर वाणि सुनि दीना
भावनाक भवसागरमे भँसिया गेल।
थाकल ठेहियाएल विलैम सोचैत
सुति जिराए लगल राखल खाट
अन्धरानीक माए-बाप रौदाएल
खेतसँ एला हहाएल-फुहाएल
अपसियाँत होइत नेने संगे
एक मोटा तरकारी, एक बोझ घास
दलानक खाटपर सुतल देखलैन
एक युवक अनभुआर अनचिन्हार
अचरज भऽ देखलैन आँखि निरारि
गोर वर्ण लमगर-पोरगर
रूप स्वरूप रहए ताना-उतार

पुरुषक पौरुष संगे विद्यमान
बुझि पड़लैन कोनो छी कर्णधार
आशा जगलैन कऽ लइ छी बात
मुदा पेट पचकल मुँह-ठोर सुखल
सुतल देख नहि बाजल किछु बात।

दीना- अबैक किनको आहट सुनि
अकचकाइत उठि ठाढ़ भऽ कऽ
विनय भावपूर्ण दुनू हाथ जोड़ि
हृदयसँ केलक झुकि प्रणाम।

अन्धरानीक पिता-
आशीष वचन दैत धर्मनाथ
बैसैक आग्रह भावपूर्ण केलकैन
अपनो बैस परिचय पुछलकैन
प्रसन्नचित्त भऽ सुने लगलैन
नजैर चढ़ा दीनाकेँ देखैत
किछु आशा मनमे राखए लगलैन।

अपन परिचय दैत दीना बाजल-
गरीबक कोनो गाम नहि होइए

जेतइ धड़ तेतइ घर बुझू
कमा-खटा जिनगी चलबै छी
श्रमकेँ हम अपन पूजी बुझै छी
कर्म बुझि परिश्रम करै छी
रूख-सुख खा पेट भरै छी
मानव सेवाकेँ पैघ बुझै छी
कर्मपर निर्भर स्वावलम्बी जिनगी
सभकेँ एक जाति मनुक्ख बुझै छी
ओना दीना हमर नाओं छी
माए कल्याणी पिता शंकर छैथ
गाम माणिकपुर मिथिला रहै छी
दीन-हीन बेरोजगार छी हम
काजक खोजमे अखन चलल छी
अंजान बुझि अपनेक समक्ष छी।

धर्मनाथ- अनचिन्हा जानि पुछलौं हम
अतिथि बुझि समय लेलौं
नहि राखब मनमे कोनो रोख
नहा-खा जिरा लिअ तखन

हमहूँ निचेनसँ करब आरो-आर बात
हमहूँ देब पूर्ण परिचय अपन
समय भेल अखन भोजनक बेर
हमहूँ नहा देव-पितर कऽ लइ छी
थाकल छी अहूँ नहा लिअ
देहक पीड़ा जखने उतरत
तखने भोजनमे रूचि बढ़त
दुनू गोरे संगे-संग भोजन करब।

धर्मनाथक संगे-संग दीना
भोजन करैले आँगन गेला
अन्धरानी ओसारपर चौका लगा
दू गोट आसन लगौने छेली
आसनपर बैसते देरी
थारी भरल दर्जनो व्यंजन
अन्धरानी आगू राखि गेली
दूध-छालही, दहीक बड़का बट्टा
भरल देख दीना अकचका गेल
एहेन आदर पहिल बेर भेल

प्रेम भाव देख मन बसि गेल
आँगनसँ दलान अबिते देरी
धर्मनाथ दीनासँ पुछलखिन।

धर्मनाथ- केहेन काज केतेक कमाएब
की अहाँक अरमान अछि
नीक-बेजा तँ अहीं कहब
हम तँ कने सुधारि देब
कर्मठ जनु अहाँ बुझि पड़ै छी
जे कर्म बुझि करए चाहैए
तेकरे मदैत भगवानो करैए
भाव देख अभाव नहि होइए।

दीना-
आशावादी नहि कर्मवादी छी हम
पुरुष छी पौरुषक बलपर
दुनियाँमे हम जीबए चाहै छी
कमाएब बेसी लिलसा नहि अछि
जेतेसँ परिवार चलि जाएत

ओतनेमे हम सन्तोख करै छी
काज कोनो छोट-पैघ नहि होइए
कर्मसँ होइए लोक छोट-पैघ
सेवा काज जेहेन करए पड़त
तइले हम तैयार रहै छी
जननी जन्मभूमिक सेवा हमरा
मिथिलासँ मिलल संस्कार छी
पूर्ण परिचय अहूँ दिअ हमरा
समय कुसमय संग साथ देब।
सामर्थ नहि, तैयो सत्कार करब।

धर्मनाथ- परिचए-पात तँ भइये गेल
अपने कुटुम अहाँ मानि लिअ
हम उदार, जगत अपने बुझै छी
इहए हमर उत्तम संस्कार छी
धर्मनाथ नाओं छी हमर
धर्मपुर गाम इहए छी
नि:सन्तान नहि, इकलौती बेटी अछि
गुणवती, रूपवती, सत्यवती

बुझू साक्षात लक्ष्मीए सन छी
काया कंचन खिलल कमल सन
मुदा तिल भरि कर्मक चुकल-ए
नयन सुखसँ बचल अछि।

दीना- सुनि अचम्भित भऽ बाजल-
ई की कहि हमरा भ्रमित करै छी
की हमरामे अहाँ दोष बुझै छी
अन्धरानी तँ ऊ रत्नमणि छी
जे चानक इजोरियाकेँ मलिन करैए
पहिल परिचय दुखद बतबै छी
की हमरासँ परीक्षा लइ छी
वा नाँहक कहि हमरा टाड़ै छी।

धर्मनाथ- प्रत्यक्षक आगू प्रमाण की
कहू तँ सामने खड़ा कऽ दइ छी
एक नजैर अपनो देखि लेब
मनमे सन्तोष हेबे करत
किछु समस्या दूरो हएत
साँच-झूठक खुदबुदी हटि जाएत।

(4)

दलानेसँ दयानाथ अन्धरानी पुकारि
समक्ष उपस्थित हुअ कहलक
लाजवश अन्धरानी कोन्टेसँ बजली
पहिने सखी सुचिताकेँ बजा दीअ
तखन निधोख बात करैत
सखी संग हम समक्षमे आएब
धर्मनाथ उठि सुचिताकेँ बजौलैन
दुनू सखी कनफुसकी केली।
सुचिता- काका, अहाँ चलि जाऊ हवेली
तखन हम दुनू सखी मिलि
दीनासँ बात करब शान्त एकान्त
अन्धरानी सुचिता संग एली
चौल करैत सुचिता दीनासँ बजली
काज खोजमे घर छोड़ि चललौं
पियासक लाटे हमरा घर एलौं
ऐठाम छै काज बहुत रास
धनो मिलि जाएत अफरजात
कीए घुमब दुनियाँदारी

लोक बुझत अहाँक लचारी
रहि जाउ काज करब अहीठाम
अपन घर बुझि राखब मान
अतिथि जानि करब हमहूँ सम्मान।

दीना- कहलौं नीक हमहूँ सुनलौं
मनमे लइ छी दृढ़ विचार
पहिने बुढ़ माए-बापकेँ खाइले
जाइ छी गाम करब कोनो इन्तजाम
पुन: आबि काज करब ऐठाम
मुदा हम छी निश्छल कर्मवादी
अभिमानी नहि स्वाभिमानी
मेहनत-मजदुरी की भेटत सालक
बिनु शर्तक केना करब काज
केहेन काज केतेक मजुरी भेटत
पितासँ पूछि कऽ लइ छी
तखन काज लेब हम मनमे ठेकानि
जानि अहूँक बात लेब मानि
फड़ियाएल रहत तँ नहि हएत कोनो हानि।

अन्धरानी-

नइए सखी सुचितापर बिसवास
तँ हमरापर राखू पूर्ण आश
पितासँ करा दइ छी अखने साक्षात
फरिछाकऽ करि लिअ फइलसँ बात
सुचिता सखी हे, पिताकेँ बजा कऽ
करा दियौ सम्मुख विस्तारसँ बात।

धर्मनाथ-

दीनाक दिलक बात सुनि
अपन मनमे राखि लेलक
प्रेम भाव नजैरसँ दीनाकेँ
ऊपर-सँ-निच्चाँ निहारि लेलक
आश रखैत विचारि बाजल
ने काजक ने धन-सेरक कमी अछि
मनमुताबिक जे काज अहाँ कऽ सकी
मुँहमंगा मजुरी लऽ सकी
मुदा, एक शर्त्त जँ मानि ली अहाँ
तखन कहब हम दिलक राज

जँ अहाँ मानि लेब हमर बात
अहींपर सोपि लेब अपन राजपाट
हमरा अछि अहाँपर बिसवास
आशा अपेक्षा राखि कहै छी
सभ गुणसँ सम्पन्न रहितो बेटी
नयन सुखसँ वंचित अछि
जँ अन्धरानीकेँ अहाँ अपनाए
परिणय सूत्रमे बान्हि लिअ
राज-पाट कऽ देब अहाँक नाओं
हम संयासी बनि घुमैत रमैत
जिनगी बिताएब तीर्थ स्थान
अहाँ रहब सुखी धनवान।

दीना-
कहलौं अपने बड़नीक बात
हम लोभी नहि निरलोभी छी
नहि लेब हम अहाँक राज-पाट
समाजमे हम अधर्मी कहाएब
अपन सुख स्वार्थ खातिर

अहाँकेँ देब नर्कक बास
हम स्वार्थी नहि श्रमकर्मी छी
श्रम सेवामे धरम बुझै छी
माए-बापसँ हम करब विचार
जखन हुनको हेतै बात मंजूर
तखने करब हम अहाँसँ बात
ई अखन नहि करब मंजूर
मुदा अहीं मालिक हम सेवक बनि
दुनू परिवारक राखब लाज।

धर्मनाथ-
खुशी मनसँ अहाँ जाउ घर
हमहूँ दइ छी मनसँ आशीष
हमरा अछि अहाँपर बिसवास
पहिने सेवा माए-बापक करू
तखन करब हमर राज-काज
अहाँक माए-बापसँ मिलि हम
निचेनसँ करब सम्बन्धक बात
तखन नहि हएत कोनो विश्वासघात।

दीना-

चलैत बेर दीना नजैर उठौलक
अन्धरानी छल चिनवारकात ठाढ़
गजब मुस्की ठोर कमलसन लाल
गालपर झड़ि रहल छल अश्रु धार
मोती सन चमकैत मुँहक बत्तीसी
मुँहक लाली मलिन करै छल
चान-सुरुजकेँ साँझ-विहान
चन्द्रमुखी स्वर्गक परी सन
अचरज नजैरसँ दीना देखैत
जहिना देखैए चकोर चान
कारी कुन्तल घनगर छाँहमे
काया-कंचन हृदय निर्मल सन
रूढ़ीवादी नहि अधुनातन मन
जेना चान छिपल रहैए कारी घन
देख दीना ठकुआए गेल
दया सागरमे जेना डुमि गेल।

उद्धत दृश्य देख बजला धर्मनाथ-
बाउ, नेने जाउ ई मोटरी सनेस

माए-बाप आश लगौने हेता
बेटा कमा नेने आएत सनेस
मधुर मेवाक संग खुआ-पकवान अछि
पाँचटा अशर्फी सेहो देल अछि
ई बुझू हम सगुण दइ छी
जखने देबैन ई मोटरी सनेस
खोलिते हेतैन मनमे संतोख
सिनेहसँ पुछता केतए-सँ अनलह
के देलकह ई अनमोल सनेस
दिलक बात अहाँ कहि देबैन
आश जुड़ेतैन नहि हेता निरास
मन द्रवित हेतैन दया उमैड़
नव विचार मनमे जगतैन
तखने बनत सम्बन्धक बात
बेसी बात हम अखन नहि कहब
चलचलाउ छी अहाँसँ आश करै छी
अन्धरानीकेँ नहि करबै निराश
हमर नयन तकैत रहत अहाँक बाट।

(5)

दीना धेलक गृहक बाट
धपगर धाप दैत बाटपर
पहुँचल अपन गाम-घर
सनेसक मोटरी राखिते देरी
पहिने केलक माए-बापकेँ प्रणाम
आशीष पाबि लेलक विराम
थाकल, चिन्तित दीना बाजल
पिताजी, निचेनसँ करब बात
माए कल्याणी उदासे मने बजली-
बेटा नहि भेलह कोनो आमदक काज
पेटक खर्चा केना कऽ चलतह
जँ नहि देबहक काजपर धियान
वर्तमान भविष्यक तँ छैहे अन्हार
केना करबहक कोनो बनिज-वेपार
तोरे कमाइपर रखने छी आश
सेहो लगैए आब भेल निराश
बुढ़ारी जिनगी दुख भारी लगैए

केना काटब आब दिन राति
तीन दिनक उपास पर भेल प्रात।

हँसमुख भऽ दीना बाजल
नहि करू चिन्ता आ ने शोक-सन्ताप
नीमन काज खोजि धर एलौं हेन
पहिने लिअ ई सनेसक सुआद
पछाइत करब विचारक बात
जखने अहाँ हुकुम फरमाएब
पकैड़ लेब हम नीमन काज
मेहनत-मजुरी नीके भेटत
तहूसँ बेसी भेटत मान-सम्मान
मुदा काजमे एकटा शर्त अछि
तेकरो करए पड़त अहाँकेँ निदान
तइले हम माँगै छी क्षमादान।

दीनाक पिता शंकर बजला-
बौआ, अनकर काज करैले चललह
तइमे लगल छह नव विधान

सभ संकटकेँ झेलए पड़तह
चोखा काज दिन-राति करेतह
तेकर परीक्षा कठोर लेतह
मेहनत मजुरी जी-हजुरी करेतह
तखने देतह काजक सम्मान
फरिछाकऽ हमरा बात बताबह
केहेन काज केहेन शर्त छह लागल
बिनु संकोचे बाजह जानि
हमहूँ सोचब करब विचार
तखने हेतह तोहर कल्याण।

दीना पितासँ बाजल-
काज कठिन नहि असाने अछि पिताजी
लूरि तेकर अहाँ सिखौने छी
काजमे तँ हम नै हारब
ने कियो बाँहि पकैड़ सकत
मुदा शर्त्त तँ अछि भारी
बिनु कहने अहाँ नहि बुझब
हम कहैमे थोड़ेक नचार छी

सोचू तइले करू विचार
जे कहैमे हम हएब तैयार
तखने लगत जिनगीक बेरा पार।

दीनाक पिता सोचि बजला-
बिनु कहने के बुझतह मनक बात
जा कहबह नहि ता समाधान नै हेतह
लाज विचारकेँ राखह कात
माए-बाप तँ समुन्दर होइए
सभ बातकेँ पेटमे पचबैए
दिल खोलि नि:संकोच बाजह
सही ज्ञान तँ हमहीं देबह
नहि देतह कियो दोसर काज
परिवारक बोझा छह माथपर भारी
तइले करए पड़तह तैयारी
चौथापनमे हम की करहबह
सोचि, सही कर्मक पकड़ह बाट
विधाता देतह तोहर साथ
बिगड़ल बात सुधरैत जेतह

माटि छुबहक तँ सोना बनतह
भेटतह यश-प्रतिष्ठा चारूकात।

नीक अवसर देख बाजल दीना
जे बात अहाँ बता रहल छी
तही बातक हम पालन करब
दिलक राज अखन खोलै छी
सुनि अहाँ विचार दिअ हमरा
धर्मनाथक घर खोजलौं काज
छैन हुनकर एकटा नव विधान
हमर बेटी अन्धरानीकेँ जे अपनौत
परिणय सूत्रमे बान्हि जिनगी बितौत
तेकरे देत ओ जिनगी भरिक काज
सभ धन-सेर तेकरे नाओ कऽ देत
दुनू परानी चलि जाएत तीर्थक बाट-घाट
मुदा बेटी आँखिसँ आन्हर
रूप-गुणसँ सम्पन्न अछि परी समान
दिलक बात हम कहि सुनेलौं
आब सुनाउ अहाँ अपन फरमान।

दीनाक पिता शंकर बजला-
बौआ घरमे अथवल माए-बाप छह
तेकर बोझ माथपर पड़ल छह
तैपर सँ अन्हरी कनियाँ एतह
बोझक भार दोबर भऽ जेतह
असगरे तोरा पार नहि लगतह
कमाइत-कमाइत रहबह फिरिशान
अन्हरी नाचतह अपने ताले
तूँ धेने रहबहक अपन सुर-ताल
सुर-ताल, नाचमे मेल नहि खेतह
जिनगी भऽ जेतह छिगड़ीतान
तखन देखेतह धरती-आसमान
चितंगे खसबह गगनसँ धराम
चारूकात सँ समस्या घेरि लेतह
नहि मिलतह जिनगीमे कहियो आराम।

दीना पितासँ बाजल
दीन हीन छी, ज्ञान हीन नहि

नीक करब तँ बेजाए किए हएत
जँ दुनू परिवारक काज आगू बढ़त
तँ के कहत ई छी अधला काज
समाजो देख मुँह नहि उठाएत
उत्तम काजकेँ लोको सराहत
सभ मिलि देत शुभ आशीर्वाद
लाभ छोड़ि किनको हानि ने हएत
जखने करब हम अपन नेत्रदान
तखने ने अन्धरानी नेत्रानी बनत
अपन नयनसँ दुनियाँकेँ देखत
लोको कहत कल्याणक बात
नव पीढ़ीमे नव जागृति आएत
अपंग अनाथसँ कियो घृणा नहि करत
दुख-सुखमे सभ मिलि देत साथ
करम देख विधनो दुख हरत
अन्धरानी अर्द्धांगिनी बनि कऽ
जिगनगी धरि देत हमर साथ
पुतोहु बनि जखने घर आएत
अहूँ सबहक करत सेवा सत्कार।

दीनाक पिता शंकर बजला-
बाउ दोस्ती कुटमैती बरोबरिमे करैए
कुश्ती करैए सेसगर जानि मानि
जँ दोस्ती कुटमैती नीच-ऊँच हेतह
सहए पड़तह जिनगी धरि अपमान
कुश्ती तँ हुश्ती होइत अछि
क्षणेमे बलक परीक्षा होइए
मुदा, तोहर परीक्षा बड़ करगड़ छह
सोचि ज्ञानसँ लिअ पड़तह काज
हमर सोचसँ तोहर श्रेष्ठ छह
हमहूँ दइ छिअह मोनसँ अशीर्वाद
धर्मनाथजीकेँ समाद पठा बजबै छिऐन
विचार करब बिआहक बात।

पिताक विचार सुनि दीनाकेँ बढ़ल आश
मनमे बान्हलक सवुरक बान्ह
मुदा जाति-पातिक छिप्पल रहस्य
दीनाकेँ मनमे होइ छल छह-पाँच।

पिता शंकर पुछलैन मनक बात
बाउ एकटा बात तँ नहि पुछलियह
जाति मूल गोत्र नहि फरिछेलह
तखन केना करब बिआहक बात
दरबज्जापर बजा कऽ किनको सँ
जाति-पाति पुछब, भेद भव हएत
तखन मानहानि बुझि विषाएत
मनमे हएत दुख सन्तापक कुचाठ।

दीना- प्रेमक बन्हन सभसँ मजगूत होइए
जे तोड़लोसँ नहि टुटने टुटैए
जाति-पातिक बान्ह तनुक होइए
प्रेमक बाढ़ि क्षणेमे तोड़ि भँसिया दइए
जाति धर्मसँ ऊपर उठि देखियौ
प्रेम तँ ईश्वरक वरदान बुझाएत
देखियो दुनियाँकेँ सम नजैरसँ
भेद कुभेदक बीच मनुक्ख जीबैए
मनुक्खक दुख दइले मनुक्खे होइए

केकरो स्वर्ग तँ केकरो नरक बीतैए
जाधैर मनुक्खक एक जाति नहि हएत
ताधैर धरतीपर स्वर्ग केना आएत
प्रेम बढ़त, जगतमे जाति मिटत
तखने जगमे मनुक्खक मान बढ़त
सोच, बेवहार बदैल कर्मकेँ देखियौ
सभ जन लगत एक ईवरक सन्तान
सभक हृदयमे प्रेम भरल अछि
सम्पूर्ण जगत लगत सुखक खान
जेकरा बिगाड़ने अछि जातिक बान्ह
भटका रहल-ए पाखण्डी शैतान।

दीनाक पिता शंकर बजला-
बाउ, जाबे जाति कर्म मूल गोत्र नै फरिछेबह
ता केना करब बिआहक बात
तूँ कनी हमरा बताबह दिलक राज
हमरो मनमे हएत पूर्ण विश्वास
जएह तूँ करबह सहए हम करब
नहि अछि मनमे कोनो दूजा भाव।

दीना पितासँ बाजल
मनुक्ख-मनुक्खमे भेद नहि बुझू
ई तँ समाजक मैलछाह कुरीति छी
जन्मसँ तँ सभ मनुक्खे होइए
कर्मसँ लोक अपन जाति कहबैए
जाति मूल गोत्र कोनो रहए
जँ मनुक्ख गुण सम्पन्न हुअए
कर्मी धर्मी संस्कारी रहए
वएह जन जगमे राखैए मान
ओकरे करैए सभ दुनियाँमे सम्मान
अन्धरानी तँ नीक संस्कारी छी
अबिते घरमे बढ़ेती सबहक मान
नेत्रहीनता तँ ओकर बीमारी छी
जेकरा करब हम समुचीत निदान
भेदभाव हटा नि:संकोच करू काज।

दीनाक तर्कपूर्ण बात सुनि शंकर
फँसि गेला पुत्रमोहक जाल

मन थीर कऽ सोच-विचार केलैन
बेटाक बिआह सुझए लगलैन
जाति पातिक भकमोड़ छुटलैन
हृदयमे जगलैन दृढ़ विश्वास
आँखि फरैक शुभ संकेत देलकैन
पिसियौत भाए रीतिलालकेँ समझेलैन
समदिया बना धर्मनाथ लग पठेलैन
बिआहक सम्बन्ध स्वीकार केलैन।

धर्मनाथ-
जखने भेटल शंकरक समाद
धर्मनाथकेँ भेल मनमे विश्वास
जा कऽ करब बिआहक बात
दोसरे दिन ओरियौलैन पाँचटा भार
एलैन करैले बिआहक पक्का बात
दरबज्जेपर शंकर केलैन सत्कार
नहि कोनो भेद आ ने छल हृदयमे अभाव
मुखमण्डलपर रहैन खुशीक छाप
प्रेम भरल सेवा, नहि छल जातिक भेदभाव

गप-सप्पमे दुनूक हृदय जुड़ेलैन
जेना गंगामे जमुना मिलि हुलसलैन
बिआहक सम्बन्ध पक्का भऽ गेलैन
दुनू समधि मिलि मारलैन ठहक्का
समाज संग मिलि फलदान केलैन
सोना-चानीसँ मन भरि देलैन
खुशी मनसँ दीनाकेँ देलकैन आशीर्वाद।

(6)

शंकर धर्मनाथ दुनू समैध मिलि
बिआहक दिन फरिछाबए लगला
होइत हवाइत ऐगला साल वसन्त पंचमीमे
बिआहक दिन निश्तुकी केलैन।

बिआह पूर्व धर्मनाथ विचार दैत बजला-
पहिने बेटी जमाए लेल घर बनाएब
तइमे सभ सुविधाक समान सजाएब
अहूँ आ बेटी जमाए सेहो खुशी हएत
जे देखत तेकर नयन जुड़ाएत
सभ देत हृदयसँ शुभ आशीर्वाद।
शंकर बजला-
बड़ सुन्नर विचार बजलौं समैध
हमरा तँ सभ कथुक अछि अभाव
उत्तम विचारक उत्तम फल हएत
अहाँक काजसँ सभक मन जुड़ाएत
कोठा-सोफासँ हमर सेहन्ता मेटाएत
हमरो मान समाजमे बढ़ाएत

मुदा बेटा करोबारी समाजोड़ी अछि
तेकरोसँ कऽ लइ छी राय-विचार
बैसले-बैसल शंकर दीनाकेँ देलैन हाक
सुनिते हाक दीना भेला समक्षमे ठाढ़
पिताजीक सभ बात विचार सुनलक
खुशी मनसँ केलक स्वीकार।

दुनू समैध मिलि कनफुसकी केलैन
बिआहक दिन निश्तुकी कऽ लेलैन
आगूक विचार दीनासँ पुछलैन
रखलैन दीना अपन एक शर्त्त विचार
अन्धरानी अछि दुनू आँखिसँ आन्हर
तेकरा बनाएब हम पहिने अँखिगर
तखन सम्पन्न करब बिआहक काज।

दुनू समैध मिलि चकित होइत बजला-
असम्भव काज, से सम्भव केना हएत?

दीना बाजल अपन एक आँखि
अन्धरानीकेँ देब दान

ओहो बनती नेत्ररानी जखन
अपन आँखिसँ जगत देखती
तखन करब हम शुभ विवाह
दुनू समाज मिलि देत आशीर्वाद
अन्धरानीकेँ नयन सुख भेटत
हमर प्रेम अजर अमर रहत
जगत जानत नेत्रदानक महत्त
सभक मुहेँ निकलत नेत्रदान
पिता, ससुर विचार मंजूर केलैन।

धर्मनाथ- दीना आ अन्धरानीकेँ
लऽ गेला नेत्रालय
जाँचि डाक्टर ऑपरेशन तय केलैन
दीनाक एकटा आँखि निकालि
अन्धरानीकेँ लगा देलैन।

चारि दिनक पछाइत
जखन आँखि खुजल अन्धरानीक
जगत देखए लगल अन्धरानी

अन्धरानी दीनाकेँ निहारैत
दीना निहारए अन्धरानीकेँ
जेना देखए चकौर चानकेँ
तखन दुनू समैध मिलि विचारलैन
निश्तुकी दिन बिआह सम्पन्न कऽ लेब

शंकर बरियाती साजि पहुँचला
समैध केलैन भरपूर स्वागत
मड़बापर बिआह सम्पन्न भेल
दान-दहेज भेटल अम्वार
दुनू समाज मिलि देलक आशीर्वाद
दाइ-माइ गाबए जुग-जुग जीबह
वर वधुकेँ हेतह कल्याण
दुनूक प्रेम अमर बनल रहतह
अद्भुत चमत्कार केलक दीना
दिनकर जहिना सभ दिन प्रकाश रहत
सभक मुहेँ बेर-बेर निकलैए
नेत्रदान-नेत्रदान..।।

❑❑❑